# HANDLOOMS OF INDIA

India's handloom tradition is among the oldest and most diverse in the world, representing an unbroken legacy of craftsmanship that spans millennia. As one of the country's largest livelihood sectors after agriculture, handloom weaving supports more than 35 lakh weavers and allied workers and contributes significantly to textile production and exports. India accounts for nearly 95 per cent of the world's handwoven fabric, reflecting the remarkable skill and creativity of its weaving communities. The sector preserves traditional knowledge, sustains rural economies and serves as a vibrant expression of India's cultural diversity.

National Handloom Day is observed annually on 7 August to commemorate the launch of the Swadeshi Movement in 1905, a landmark event in India's freedom struggle that championed indigenous industry and self-reliance. Instituted in 2015, the observance recognises the invaluable contribution of handloom weavers to the nation's cultural and economic life and promotes the preservation of India's rich textile heritage.

**Paithani Saree (Maharashtra)**, originating from the historic town of Paithan in Maharashtra, is one of India's most celebrated silk handlooms. Woven in silk with gold and silver zari using the tapestry weaving technique, it is distinguished by richly ornamented borders and an elaborate pallu. Traditional motifs such as Peacock (Mor), Asawali, Panja and Muthada, together with floral and avian forms, exemplify the elegance and splendour of this renowned weave.

**Moirang Phee (Manipur)** is the traditional handwoven textile of the Meitei community of Manipur, originating in Moirang in Bishnupur District. Woven primarily in cotton, it is characterised by the distinctive Moirang Pheejin motif along the borders. According to local tradition, the motif is inspired by the teeth of Pakhangba, the mythical serpent deity of Manipur, giving rise to the alternate name of Yarong Phee, meaning “Cloth with a pronged teeth pattern”, making the textile a unique expression of the region's cultural identity and folklore.

**Chanderi Saree (Madhya Pradesh)**, named after the historic town of Chanderi in Madhya Pradesh, is renowned for its sheer texture, delicate transparency and lightweight elegance. Traditionally woven from silk and cotton, it is produced on pit looms with a jacquard / dobby mechanism that intricately interlock the warp and weft. It features woven motifs such as buti, jaali, chatai and jangla, along with stylised peacocks, swans and ashrafi (gold coin) designs. Celebrated for its refinement, Chanderi remains one of India's most distinguished weaving traditions.

**Ilkal Saree (Karnataka)**, originating from the town of Ilkal in Northern Karnataka, is noted for its unique method of construction. Differently coloured pallu and body warp are joined using the Kondi technique and to get contrast coloured pallu featuring a tope teni pattern. Its vibrant colours, striped pallav and temple-inspired borders make it one of the most recognisable handloom traditions of southern India.

The Department of Posts is pleased to issue a Souvenir Sheet on "**Handlooms of India**" on the occasion of the 12th National Handloom Day, celebrating the rich textile heritage, exceptional craftsmanship and enduring cultural legacy of India's handloom traditions.

**Credits:**

| | | |
|---|---|---|
| Stamps/Souvenir sheet/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet | : | Shri Suresh Kumar |
| Text | : | Based on the content provided by the Ministry of Textiles, Government of India |


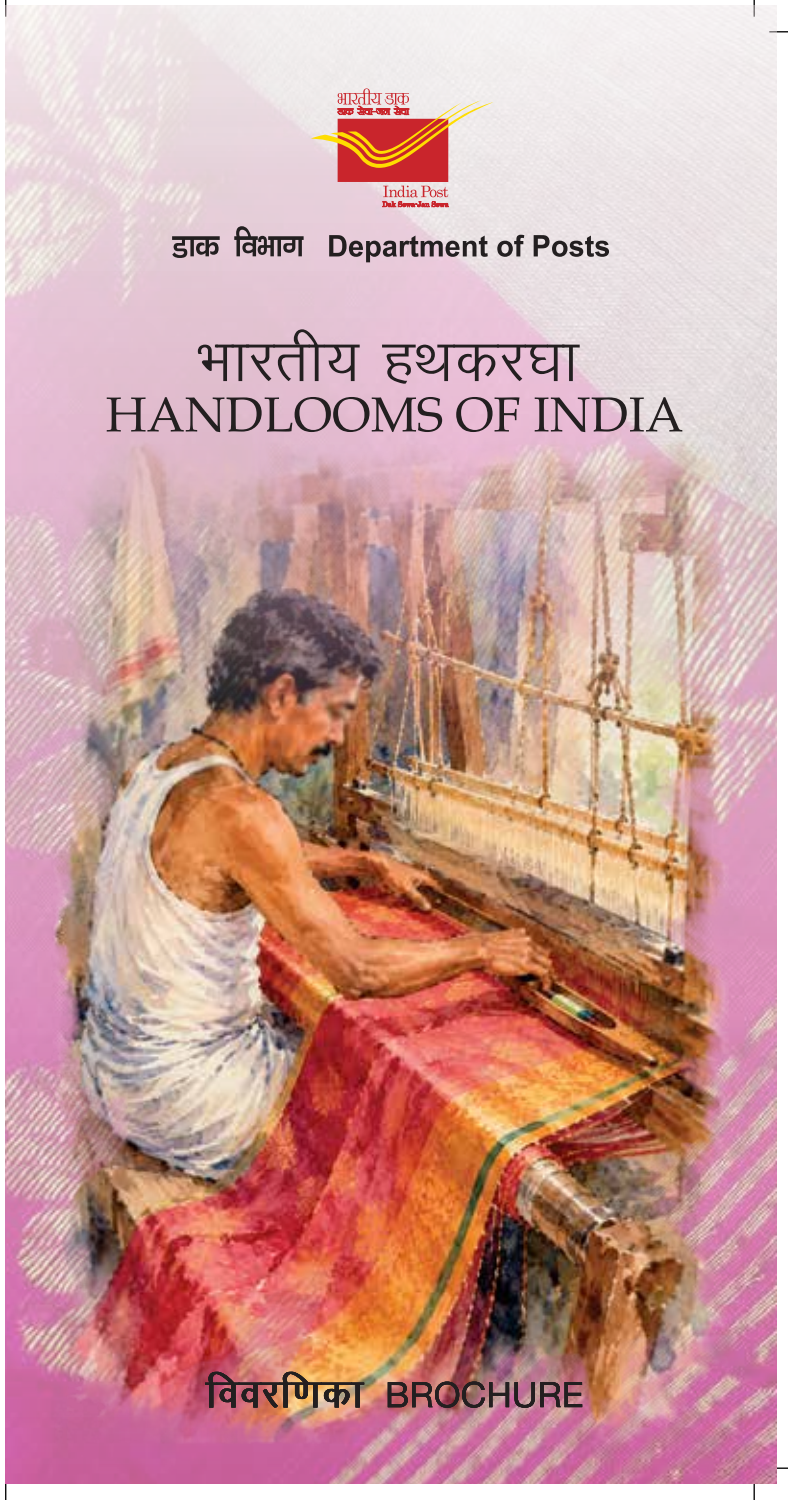

# भारतीय हथकरघा

भारत की हथकरघा परंपरा दुनिया की सबसे पुरानी और विविधतापूर्ण परंपराओं में से एक है, जो हजारों वर्षों से चली आ रही शिल्प कौशल की अटूट विरासत का प्रतिनिधित्व करती है। कृषि के बाद देश के सबसे बड़े आजीविका क्षेत्रों में से एक होने के नाते, हथकरघा बुनाई 35 लाख से अधिक बुनकरों और संबंधित कामगारों को रोजगार प्रदान करती है और वस्त्र उत्पादन तथा निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देती है। विश्व के लगभग 95 प्रतिशत हथकरघा पर बुने हुए कपड़े का उत्पादन भारत में होता है, जो यहां के बुनकर समुदायों के उल्लेखनीय कौशल और रचनात्मकता को दर्शाता है। यह क्षेत्र पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करता है, ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को सहारा देता है और भारत की सांस्कृतिक विविधता की जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करता है।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस प्रतिवर्ष 7 अगस्त को मनाया जाता है, जो 1905 के स्वदेशी आंदोलन की कड़ी को आगे बढ़ाने हेतु शुरू किया गया था। यह आंदोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्वपूर्ण घटना थी जिसने स्वदेशी उद्योग और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया। 2015 में शुरू किया गया यह दिवस, देश के सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन में हथकरघा बुनकरों के अमूल्य योगदान को मान्यता देता है और भारत की समृद्ध वस्त्र विरासत के संरक्षण को प्रोत्साहित करता है।

**पैठणी साड़ी (महाराष्ट्र)** – महाराष्ट्र के ऐतिहासिक शहर पैठन से उत्पन्न, यह भारत के सबसे प्रसिद्ध रेशमी हथकरघों में से एक है। रेशम में सोने और चांदी की जरी के साथ टेपेस्ट्री बुनाई तकनीक का उपयोग करके बुने गए इस परिधान की विशेषता इसके अलंकृत बार्डर और विस्तृत पल्लू में देखी जा सकती है। मोर, असावली, पंजा और मुठड़ा जैसे पारंपरिक रूपांकन, फूलों और पक्षियों की आकृतियों के साथ मिलकर, इस प्रसिद्ध बुनाई की भव्यता और सुंदरता को दर्शाते हैं।

**मोइरांग फी (मणिपुर)** – मोइरांग फी मणिपुर के मैतेई समुदाय का पारंपरिक हस्तनिर्मित वस्त्र है, जिसका जन्म बिष्णुपुर जिले के मोइरांग में हुआ। मुख्य रूप से सूती कपड़े से बुना गया यह वस्त्र, किनारों पर बने विशिष्ट मोइरांग फीजिन रूपांकन के लिए जाना जाता है। स्थानीय परंपरा के अनुसार, यह रूपांकन मणिपुर के पौराणिक सर्प देवता पाखांगबा के दांतों से प्रेरित है, जिसके कारण इसे मोइरांग फी भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है "नुकीले दांतों के पैटर्न वाला कपड़ा"। यह वस्त्र इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान और लोककथाओं की अनूठी अभिव्यक्ति है।

**चंदेरी साड़ी (मध्य प्रदेश)** – मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक शहर चंदेरी के नाम पर रखा गया चंदेरी कपड़ा अपनी बारीक बनावट, पारदर्शिता और कम वजन के लिए प्रसिद्ध है। परंपरागत रूप से रेशम और कपास से बुना जाने वाला यह कपड़ा, जैकार्ड/डॉबी तकनीक से युक्त गड्ढे वाले करघों पर तैयार किया जाता है, जिसमें ताने और बाने को जटिल रूप से आपस में जोड़ा जाता है। इसमें बूटी, जाली, चटाई और जांगला जैसे बुने हुए रूपांकनों के साथ–साथ मोर, हंस और अशरफी (सोने के सिक्के) के डिजाइन भी शामिल हैं। अपनी परिष्कृतता के लिए प्रसिद्ध चंदेरी भारत की सबसे प्रतिष्ठित बुनाई परंपराओं में से एक है।

**इल्कल साड़ी (कर्नाटक)** – उत्तरी कर्नाटक के इल्कल शहर से उत्पन्न, यह हस्तकला अपनी अनूठी निर्माण विधि के लिए प्रसिद्ध है। अलग–अलग रंगों के पल्लू और ताने को कोंडी तकनीक से जोड़ा जाता है, जिससे टोप टेनी पैटर्न वाला विपरीत रंग का पल्लू बनता है। इसके वाइब्रेंट रंगो, धारीदार पल्लू और मंदिर से प्रेरित बार्डर इसे दक्षिण भारत की सबसे प्रसिद्ध हथकरघा परंपराओं में से एक बनाते हैं।

डाक विभाग 12वें राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के अवसर पर "भारतीय हथकरघा" पर एक सोविनियर शीट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह सोविनियर शीट भारत की हथकरघा परंपराओं की समृद्ध वस्त्र विरासत, असाधारण शिल्प कौशल और स्थायी सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है।

**आभार:**

डाक–टिकट/सोविनियर शीट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री सुरेश कुमार

पाठ : भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

# तकनीकी आंकड़े
# TECHNICAL DATA

| | | |
|---|---|---|
| मूल्य | : | 500 पैसे (4) |
| Denomination | : | 500 p (4) |
| मुद्रित सोविनियर शीट | : | 330000 |
| Souvenir Sheets Printed | | 330000 |
| मुद्रण प्रक्रिया | : | वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : | Wet Offset |
| मुद्रक | : | प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद |
| Printer | : | Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00